



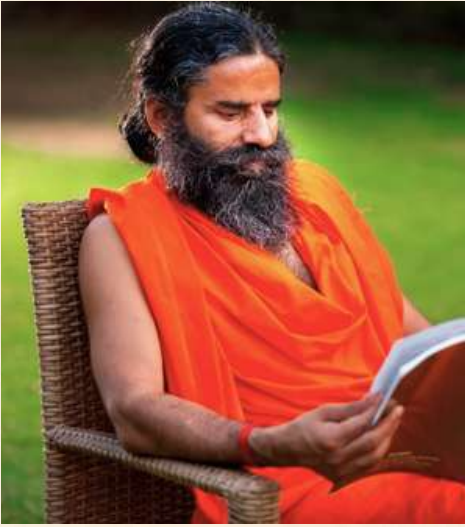
योगऋषि स्वामी रामदेव जी एवं श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज  
के पावन संकल्प व आशीर्वाद से संचालित

# देश का प्रथम आयुर्वेद गुरुकुल पतंजलि-आयुर्वेद-गुरुकुलम्



**PROSPECTUS**  
**2026-2027**

## परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज का संदेश



भारत की आत्मा उसकी ज्ञान-परम्परा में निहित है। यह वह भूमि है जहाँ जीवन को केवल भौतिक उपलब्धियों की दृष्टि से नहीं, बल्कि शरीर, मन, प्रकृति और चेतना के समन्वय के रूप में समझा गया है। भारत की सनातन संस्कृति और महान ऋषि-परम्परा ने सम्पूर्ण मानवता के स्वास्थ्य, कल्याण और संतुलित जीवन के लिए एक वैज्ञानिक एवं समग्र दृष्टि प्रदान की है।

आज जब पूरा विश्व शारीरिक व्याधियों, मानसिक तनाव और जीवनशैली से जुड़ी जटिल स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहा है, तब योग और आयुर्वेद की समग्र स्वास्थ्य-दृष्टि का महत्व और अधिक बढ़ गया है। हमारा सदैव यह दृढ़ संकल्प रहा है कि आयुर्वेद केवल एक 'वैकल्पिक चिकित्सा' तक सीमित न रहे, बल्कि विश्वभर में एक शाश्वत जीवन-दर्शन और स्वास्थ्य-विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित हो।

'पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम्' की स्थापना का उद्देश्य केवल डिग्रियाँ प्रदान करना या सामान्य चिकित्सक तैयार करना नहीं है। यह गुरुकुल वस्तुतः एक 'मानव निर्माण केंद्र' है। हमारा लक्ष्य ऐसे तपस्वी, तेजस्वी और प्रामाणिक आयुर्वेदाचार्यों का निर्माण करना है, जो धन्वंतरि, चरक और सुश्रुत जैसे महान आचार्यों की परम्परा के सच्चे प्रतिनिधि बनकर समाज की निस्वार्थ सेवा करें।

इस पावन प्रांगण में विद्यार्थियों को केवल बौद्धिक और पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखा जाएगा। यहाँ शिक्षा के साथ अनुशासन, सात्त्विक जीवनशैली, योग, ध्यान, संवेदना और राष्ट्र-सेवा के संस्कारों का समन्वय होगा, ताकि ज्ञान के साथ चरित्र और कौशल के साथ उत्तरदायित्व का भी विकास हो।

यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर निकलने वाले विद्यार्थी आधुनिक युग के ऐसे ज्ञान-साधक बनें, जो अपनी उत्कृष्ट विद्या, निर्मल आचरण और सेवा-भाव से समाज और वैश्विक स्वास्थ्य-जगत में सार्थक योगदान दें। वे जहाँ भी जाएँ, भारतीय ज्ञान-परम्परा के प्रतिनिधि बनकर उसके मूल्यों और वैज्ञानिक दृष्टि को आगे बढ़ाएँ।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब शिक्षा जीवन से जुड़ती है, ज्ञान कर्म में परिवर्तित होता है और युवा अपनी प्रतिभा को समाज एवं राष्ट्र के हित से जोड़ता है, तब शिक्षा केवल व्यक्ति का निर्माण नहीं करती, बल्कि समाज और राष्ट्र के भविष्य को भी दिशा देती है।

राष्ट्र सेवा के व्यापक उद्देश्य के साथ योग और आयुर्वेद की समग्र दृष्टि के माध्यम से स्वस्थ, सशक्त और समृद्ध भारत के निर्माण में अपनी आहुति अवश्य दें। 'स्वस्थ भारत, विश्वगुरु भारत' के पावन संकल्प से जुड़ने वाले सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरा अनंत आशीर्वाद।

- स्वामी रामदेव

## परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी का संदेश



भारत की ज्ञान-परम्परा केवल हमारे अतीत की धरोहर नहीं, अपितु हमारे वर्तमान का मार्गदर्शन और भविष्य के निर्माण की आधारशिला है। आज जब सम्पूर्ण विश्व स्वास्थ्य के समग्र, प्राकृतिक एवं सतत् विकल्पों की ओर देख रहा है, तब भारत के लिए यह महत्वपूर्ण दायित्व है कि वह अपनी आयुर्वेद-परम्परा को केवल उपचार-पद्धति तक सीमित न रखे, बल्कि उसे जीवन-विज्ञान, अनुसंधान, नवाचार, कौशल-विकास और आत्मनिर्भरता के व्यापक माध्यम के रूप में विकसित करे।

भारत की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक उसकी युवा जनशक्ति है। इस शक्ति को केवल डिग्री नहीं, बल्कि सही दिशा, व्यावहारिक दक्षता और पर्याप्त अवसर चाहिए। इसलिए आयुर्वेद-शिक्षा को रोजगारपरक और उद्यमपरक बनाना हमारी महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। हमारा प्रयास रहेगा कि

विद्यार्थी औषधीय कृषि, औषधि-निर्माण, गुणवत्ता परीक्षण, अनुसंधान, आयुर्वेद-आधारित उद्योग, स्वास्थ्य एवं वेलनेस तथा उद्यमिता जैसे विविध क्षेत्रों की संभावनाओं को समझें और आवश्यक व्यावहारिक कौशल विकसित करें। वे न केवल अपने लिए रोजगार के अवसर तलाशें, बल्कि भविष्य में अन्य युवाओं के लिए भी अवसरों का सृजन करने में सक्षम बनें। हम चाहते हैं कि यहाँ से निकलने वाला प्रत्येक विद्यार्थी यह विश्वास लेकर आगे बढ़े कि आयुर्वेद केवल उसका विषय नहीं, बल्कि उसकी जिम्मेदारी भी है।

किन्तु शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल चिकित्सक या तकनीकी विशेषज्ञ तैयार करना नहीं है। ज्ञान के साथ संस्कार, कौशल के साथ संवेदना और विज्ञान के साथ प्रकृति एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी आवश्यक है। गुरुकुल की परम्परा इसी समग्र व्यक्तित्व-निर्माण की प्रेरणा देती है। हमारा उद्देश्य ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जिनमें अपनी परम्परा के प्रति श्रद्धा और आधुनिक विज्ञान के प्रति जिज्ञासा, दोनों का संतुलित विकास हो; जो अपने ज्ञान को समाज के हित में प्रयोग करने की क्षमता और संवेदना रखते हों।

पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् इसी समग्र चिंतन का एक विनम्र प्रयास है—जहाँ शिक्षा जीवन से जुड़ेगी, शास्त्र प्रयोग से जुड़ेगी, कृषि उद्योग से जुड़ेगी और अनुसंधान नवाचार से जुड़ेगी। यहाँ हमारा प्रयास रहेगा कि परम्परागत ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच सार्थक संवाद स्थापित हो तथा विद्यार्थियों को सीखने के साथ-साथ प्रयोग करने, नवाचार करने और अपने कौशल को वास्तविक जीवन में उपयोग करने के अवसर मिलें।

मेरा विश्वास है कि जब हमारी युवा पीढ़ी को ज्ञान, संस्कार और व्यावहारिक अवसरों का समन्वय प्राप्त होगा, तब वह न केवल अपने जीवन को सार्थक दिशा दे सकेगी, बल्कि भारत की समृद्ध आयुर्वेद परम्परा को आधुनिक संदर्भों में नई ऊँचाइयों तक ले जाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस दिशा में प्रयासरत सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को मंगलमय जीवन की अनंत शुभकामनाएं।

- आचार्य बालकृष्ण

## प्राचार्य का संदेश



पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् के पावन प्रांगण में आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) और राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग (NCISM) के शैक्षणिक एवं वैधानिक मानकों पर संचालित हमारा यह संस्थान, शिक्षा जगत में एक अनूठा और सफल प्रयोग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के आलोक में, हमने शिक्षण पद्धति में व्यापक बदलाव किए हैं। हम रटंत विद्या (Rote learning) की परिपाटी से पूरी तरह बाहर निकलकर, अनुभवजन्य, विश्लेषणात्मक और व्यावहारिक शिक्षा (Experiential and Analytical Learning) पर सर्वाधिक बल देते हैं।

एक श्रेष्ठ वैद्य केवल पुस्तकों से नहीं, बल्कि रोगियों के प्रत्यक्ष परीक्षण से बनता है। इसी को ध्यान में रखते हुए, गुरुकुल के प्राकृतिक और

अनुशासित वातावरण में, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्र कक्षा में पढ़े गए सैद्धांतिक विषयों को हमारे उन्नत बहिरंग विभाग (OPD) और अंतरंग विभाग (IPD) में नैदानिक अभ्यास (Clinical Practice) के दौरान स्वयं व्यवहार में ला सकें। उच्चस्तरीय आधुनिक प्रयोगशालाओं (Anatomy/Physiology Labs), प्राचीन पांडुलिपियों से सुसज्जित समृद्ध पुस्तकालय, डिजिटल स्मार्ट क्लासरूम और अत्यंत अनुभवी आचार्यों के सान्निध्य में छात्रों को विषय की अथाह गहराई तक जाने का अवसर मिलता है।

शिक्षा के साथ-साथ संस्कार हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। गुरु-शिष्य परंपरा का निर्वहन करते हुए दैनिक योग, ध्यान, यज्ञ और सात्विक दिनचर्या के माध्यम से छात्रों का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना हमारा लक्ष्य है। हमारा अंतिम ध्येय छात्रों को केवल एक वैद्य की उपाधि (Degree) प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें मूल्य-आधारित शिक्षा (Value-based Education) प्रदान कर एक उत्कृष्ट नागरिक और एक संवेदनशील चिकित्सक बनाना है, जो भविष्य में समाज के हर वर्ग को आरोग्य प्रदान कर सकें। इस प्रकार विद्या और संस्कारों का यह पवित्र परिसर छात्रों के स्वर्णिम भविष्य की एक मजबूत और स्थाई नींव रखता है।

- वैद्य केतन महाजन

## पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् का परिचय

परम पूज्य स्वामी रामदेव जी एवं श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी के पावन आशीर्वाद तथा दूरदर्शी संकल्प से स्थापित 'पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् हरिद्वारम्' भारतीय ज्ञान-परंपरा, आयुर्वेद एवं आधुनिक विज्ञान के समन्वय का एक विशिष्ट केंद्र है। 'स्वस्थ भारत, विश्वगुरु भारत' के संकल्प से प्रेरित यह गुरुकुल विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, संस्कार एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित है।

पतितपावनी माँ गंगा के पावन तट एवं हिमालय की शिवालिक पर्वतमालाओं की तलहटी में स्थित यह गुरुकुल महर्षि धन्वंतरि, आचार्य चरक एवं आचार्य सुश्रुत की गौरवशाली आयुर्वेद परंपरा को आधुनिक युग में जीवंत करने वाला एक तपोवन है। इसका उद्देश्य आयुर्वेद के शाश्वत सिद्धांतों का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें समकालीन वैज्ञानिक चिंतन एवं आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत करना है।

गुरुकुल में शास्त्रीय अध्ययन के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं कौशल-विकास पर विशेष बल दिया जाता है। विद्यार्थियों को आयुर्वेद के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ चिकित्सकीय अभ्यास, औषधीय वनस्पतियों, औषध-निर्माण तथा आयुर्वेद के विविध व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराया जाता है। साथ ही भारतीय संस्कृति, अनुशासन, नैतिक मूल्यों एवं सेवा-भाव को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर ऐसे सक्षम, संवेदनशील एवं कर्तव्यनिष्ठ आयुर्वेद विशेषज्ञों के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है, जो समाज एवं राष्ट्र के स्वास्थ्य-कल्याण में सार्थक योगदान दे सकें।

संस्थान का व्यापक लक्ष्य आयुर्वेद के वैज्ञानिक एवं शाश्वत स्वरूप को सुदृढ़ करते हुए उसे राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करना तथा भारतीय चिकित्सा-परंपरा की ज्ञान-संपदा को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करना है। इस दृष्टि से पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् शिक्षा, अनुसंधान एवं सेवा के समन्वित माध्यम से आयुर्वेद के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

## संबद्धता एवं मान्यता (Affiliations & Approvals)

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय तथा भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (NCISM), नई दिल्ली द्वारा भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग अधिनियम, 2020 (NCISM Act, 2020) के अंतर्गत विधिवत् मान्यता प्राप्त तथा संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम, 2020 के अंतर्गत गठित केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से संबद्ध।



यह पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् के भवन का वास्तविक चित्र है।

## दृष्टि (Vision)

आयुर्वेद के प्राचीन ज्ञान (Ancient Knowledge) और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान (Modern Scientific Research) के समन्वय से एक ऐसी वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था का निर्माण करना, जो रोगमुक्ति के साथ-साथ समग्र स्वास्थ्य (Holistic Health) प्रदान करे। हमारा संकल्प 'स्वस्थ भारत, विश्वगुरु भारत' के स्वप्न को साकार करना है।

## लक्ष्य (Mission)

- ऐसे उत्कृष्ट आयुर्वेदाचार्यों, वैद्यों और शोधकर्ताओं का निर्माण करना, जो आध्यात्मिक रूप से जागृत, चारित्रिक रूप से सबल और बौद्धिक रूप से प्रखर हों।
- संस्कृत भाषा और मूल संहिताओं के गहन अध्ययन के साथ-साथ साक्ष्य-आधारित (Evidence-based) चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देना।
- छात्रों को पारंपरिक ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक व्यावहारिक एवं व्यावसायिक कुशलताओं से परिपूर्ण कर, उन्हें रोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए पूर्णरूपेण समर्थ बनाना।
- प्रकृति, जड़ी-बूटियों और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के साथ मानवता की निःस्वार्थ सेवा करना।



# राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 एवं भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का समन्वित शैक्षणिक स्वरूप

आयुर्वेद गुरुकुलम् की शैक्षणिक संरचना भारतीय ज्ञान परंपरा की शाश्वत विरासत को आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं व्यावहारिक कौशल के साथ समन्वित करती है। इसका उद्देश्य ऐसे सक्षम, संवेदनशील एवं शोधोन्मुख आयुर्वेद स्नातकों का निर्माण करना है, जो शास्त्रीय ज्ञान और समकालीन चिकित्सा-विज्ञान दोनों में दक्ष हों।



## मूल संहिताओं का अध्ययन



चरक संहिता, सुश्रुत संहिता एवं अष्टांग हृदय जैसे प्रमुख ग्रंथों के मूल संस्कृत पाठ एवं आयुर्वेदिक सिद्धांतों का गहन अध्ययन, साथ ही पारंपरिक चिकित्सा-पद्धतियों का व्यावहारिक परिचय।



## बहुविषयक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण



आयुर्वेद के साथ योग, प्राकृतिक चिकित्सा, आधुनिक रचनाशारीर (Anatomy), क्रियाशारीर (Physiology) तथा अनुसंधान-पद्धतियों का समन्वय, जिससे विद्यार्थियों में व्यापक एवं वैज्ञानिक दृष्टि विकसित हो।



## अनुभवात्मक एवं प्रायोगिक शिक्षा



'Learning by Doing' के सिद्धांत के अंतर्गत क्लिनिकल प्रशिक्षण, औषधीय वनस्पतियों की पहचान, कृषि, उपयोग, औषधि-निर्माण एवं प्रयोगशाला आधारित गतिविधियों पर विशेष बल।



## समग्र व्यक्तित्व एवं मूल्यपरक विकास



योग, ध्यान, अनुशासन एवं भारतीय जीवन-मूल्यों के माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास पर विशेष ध्यान।



## कौशल-विकास एवं आत्मनिर्भरता



चिकित्सा, अनुसंधान, शिक्षण एवं स्वास्थ्य-कल्याण के विविध क्षेत्रों के लिए व्यावसायिक कौशल, नवाचार, उद्यमिता एवं आत्मनिर्भरता की दृष्टि का विकास।

## पाठ्यक्रम का विवरण

|                       |                                 |
|-----------------------|---------------------------------|
| पाठ्यक्रम का नाम      | Pre-Ayurveda Programme for BAMS |
| पाठ्यक्रम की कुल अवधि | सात वर्ष और छह माह (7.5 वर्ष)   |
| स्वीकृत सीटें         | 60 सीटें                        |
| शिक्षा का माध्यम      | संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी      |

## पाठ्यक्रम संरचना (7.5 वर्ष)

CSU के गुरुकुलीय मानकों के अनुसार इस पाठ्यक्रम को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया गया है:

### प्रथम चरण: प्राक्-आयुर्वेद - (2 वर्ष)

1. यह चरण 10वीं कक्षा (मैट्रिकुलेशन) के बाद आरंभ होता है। कोर मेडिकल की पढ़ाई शुरू करने से पूर्व, छात्रों की नींव मजबूत की जाती है। इसमें छात्रों को संस्कृत भाषा, भारतीय दर्शन (न्याय, वैशेषिक, सांख्य आदि) और मूलभूत विज्ञान (Basic Sciences) का गहन ज्ञान दिया जाता है, ताकि वे आयुर्वेद के मूल ग्रंथों को उनके वास्तविक अर्थों में समझ सकें।

### द्वितीय चरण: आयुर्वेदाचार्य - (4.5 वर्ष)

1. यह NCISM के निर्धारित मानकों पर आधारित एक समग्र, बहु-विषयक एवं बहुआयामी मुख्य चिकित्सा पाठ्यक्रम (Core Medical Program) है। इसमें आयुर्वेद के मूल एवं प्रामाणिक ग्रंथों के प्रत्यक्ष एवं गहन अध्ययन के साथ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के Anatomy, Physiology, Pathology, Pharmacology, Surgery आदि विषयों का समन्वित ज्ञान प्रदान किया जायेगा

### तृतीय चरण: अनिवार्य इंटरनशिप - (1 वर्ष)

अंतिम चरण में छात्रों को विश्वविख्यात पतंजलि योगपीठ से संबद्ध चिकित्सालयों की ओपीडी (OPD) और आईपीडी (IPD) में 1 वर्ष का अनिवार्य नैदानिक अभ्यास (Clinical Internship) करना होता है। यहाँ वे वरिष्ठ आचार्यों के मार्गदर्शन में जटिल रोगों की चिकित्सा का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं।

## पाठ्यक्रम की विशेषताएं

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक, अनुसंधानपरक एवं जीवनोपयोगी चिकित्सा-शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वे आयुर्वेद के विविध क्षेत्रों में आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं दक्षता अर्जित कर आत्मनिर्भर बनें और शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त इन आठ प्रमुख क्षेत्रों में आजीविका उपार्जन करने में सक्षम हों।



### 1. औषधीय पादप संवर्धन एवं कृषि

- आयुर्वेदिक कृषि एवं सतत कृषि पद्धतियाँ
- औषधीय पादपों का संग्रहण, संवर्धन, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन

### 2. आयुर्वेदिक द्रव्यगुणविज्ञान एवं भैषज्य द्रव्यज्ञान

- औषध द्रव्यों की पहचान एवं वर्गीकरण-विज्ञान
- औषध-द्रव्यों के गुण, कर्म एवं चिकित्सीय प्रयोग
- औषध-द्रव्य चयन, मात्रा एवं युक्तियुक्त प्रयोग

### 3. औषधि निर्माण एवं भैषज्य कल्पना

- रसशास्त्र, द्रव्यशोधन एवं आयुर्वेदिक औषधि-निर्माण
- कच्चे द्रव्यों का प्रसंस्करण एवं गुणवत्ता नियंत्रण

### 4. साक्ष्य-आधारित अनुसंधान एवं विकास

- आयुर्वेदिक औषधियों के नवाचार एवं नवीन औषध-रूपों का विकास
- अनुसंधान पद्धति एवं आँकड़ा विश्लेषण
- आयुर्वेदिक पद्धतियों का साक्ष्य-आधारित मूल्यांकन
- नैदानिक अनुसंधान दस्तावेज़ीकरण और प्रकाशन

### 5. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

- योगाभ्यास एवं चिकित्सीय अनुप्रयोग
- प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धांत एवं व्यावहारिक प्रयोग

### 6. नैदानिक प्रशिक्षण, स्वस्थवृत्त एवं रोगप्रतिषेध

- रोग-रोगी परीक्षा एवं रोगी-प्रकरण आधारित नैदानिक प्रशिक्षण
- स्वस्थवृत्त, पथ्य-अपथ्य एवं स्वास्थ्य संवर्धन
- निदानपरिवर्जन एवं रोगप्रतिषेध

### 7. समेकित, समग्र एवं पारंपरिक चिकित्सा-विज्ञान

- यज्ञ चिकित्सा
- धूम चिकित्सा
- मन्त्र चिकित्सा
- ध्वनि चिकित्सा
- सूर्य-किरण चिकित्सा
- प्राण-आधारित चिकित्सा-पद्धतियाँ
- मर्म चिकित्सा
- सुगन्ध-आधारित चिकित्सा-पद्धतियाँ
- जीवनशैली-आधारित स्वास्थ्य प्रबंधन

### 8. संभाषण एवं विचार-प्रस्तुतीकरण कौशल

- आयुर्वेदिक सिद्धान्तों को सरल एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना।
- व्याख्यान, संवाद एवं विभिन्न माध्यमों से आयुर्वेद का प्रसार करना।
- जनसामान्य तक आयुर्वेद के ज्ञान एवं उपयोगिता को पहुँचाना।

# शैक्षणिक एवं नैदानिक सुविधाएँ

छात्रों के सर्वांगीण विकास और उन्हें श्रेष्ठ वैद्य बनाने के लिए गुरुकुल में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) और भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (NCISM) के मानकों के अनुरूप विश्वस्तरीय सुविधाएँ उपलब्ध हैं:



## स्मार्ट क्लासरूम और शिक्षण

आधुनिक ऑडियो-विजुअल (AV) सुविधाओं से सुसज्जित कक्षाएँ, जहाँ डिजिटल तकनीक और पारंपरिक पाठन का संगम होता है।



## समृद्ध पुस्तकालय

आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, और भारतीय दर्शन की हजारों पुस्तकों और दुर्लभ प्राचीन पांडुलिपियों (Manuscripts) का विशाल संग्रह है।



## अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ

भौतिकविज्ञान, जीवविज्ञान, रसायनविज्ञान, रचनाशारीर (Anatomy), क्रियाशारीर (Physiology), और रोगनिदान (Pathology) आदि के प्रायोगिक ज्ञान (Practical Knowledge) के लिए उच्च स्तरीय प्रयोगशालाएँ।



## विशाल औषधीय उद्यान

विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ अत्यंत समृद्ध वनस्पति उद्यान, जिसमें हजारों दुर्लभ और उपयोगी औषधीय प्रजातियाँ हैं।



## रस-शाला और औषधि निर्माण

औषधियों के निर्माण एवं विभिन्न औषधि कल्पनाओं के प्रत्यक्ष अनुभव (Hands-on training) के लिए अत्याधुनिक रस-शाला।





ये चित्र प्रतीकात्मक रूप से दिए गए हैं।

# प्रवेश हेतु प्रक्रिया एवं पात्रता

पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् के 7.5 वर्षीय Pre Ayurveda Programme for BAMS (2 वर्ष प्राक्-आयुर्वेद + 5.5 वर्ष B.A.M.S.) में प्रवेश प्रक्रिया पूर्णतः केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) और NCISM के अद्यतन नियमों पर आधारित है। यह एक विशिष्ट गुरुकुल प्रणाली है, जिसमें प्रारंभिक प्रवेश 10वीं कक्षा के बाद ही होता है।

## शैक्षिक योग्यता

आवेदक ने किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा बोर्ड (जैसे- राज्य बोर्ड, CBSE या संस्कृत बोर्ड) से 10+2 या 5+3+3+4 प्रणाली के अंतर्गत 10वीं कक्षा (मैट्रिकुलेशन) की परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

## आयु सीमा

आवेदक की आयु न्यूनतम 15 वर्ष और अधिकतम 25 वर्ष होनी अनिवार्य है। आरक्षित वर्गों के लिए भी अधिकतम आयु सीमा (25 वर्ष) में कोई छूट देय नहीं है।

## प्रवेश परीक्षा

प्रवेश का एकमात्र आधार केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा 'NEET-PA' (National Eligibility-cum-Entrance Test – Pre-Ayurveda) है। इस बहुविकल्पीय परीक्षा (OMR based) में उत्तीर्ण होने के लिए सामान्य वर्ग (General) के उम्मीदवारों को न्यूनतम 50% और आरक्षित वर्ग (SC/ST/OBC/PwD) के उम्मीदवारों को न्यूनतम 40% अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

## चयन एवं काउंसलिंग

NEET-PA में प्राप्त अंकों के आधार पर अखिल भारतीय मेरिट सूची (All-India Common Merit List) तैयार होती है। प्रवेश मात्र ऑनलाइन काउंसलिंग के माध्यम से ही मिलता है। किसी भी प्रकार का सीधा प्रवेश (Direct Admission) पूर्णतः वर्जित है।



आवेदन  
प्रक्रिया



पंजीकरण  
शुल्क



आवश्यक  
दस्तावेज़



## आवेदन प्रक्रिया

इच्छुक उम्मीदवार भारत सरकार के 'समर्थ पोर्टल' (<https://sanskritadm.samarth.edu.in/index.php/>) पर ऑनलाइन पंजीकरण करते हैं।



## पंजीकरण शुल्क

निर्धारित पंजीकरण शुल्क का भुगतान ऑनलाइन माध्यम से होता है।

|                  |        |
|------------------|--------|
| General Category | ₹1,000 |
| EWS/OBC          | ₹600   |
| SC/ST/PwD        | ₹500   |



## आवश्यक दस्तावेज़

जैसे- 10वीं की अंकतालिका, श्रेणी प्रमाण पत्र और पासपोर्ट साइज फोटो पोर्टल पर अपलोड होते हैं।

## पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् खाता विवरण

- Account Name Patanjali Ayurved Gurukalam Haridwaram
- A/C No. 4871000100178258
- IFSC Code PUNB0487100
- Name of the Bank Punjab National Bank
- Bank Branch Patanjali Yogpeeth Santersha Branch, Haridwar



# अनुशासन और आचार संहिता

## अभिभावकों हेतु निर्देश

- सभी अभिभावकों से अनुरोध है कि संस्थान द्वारा जो भी नियम, मर्यादाएं व व्यवस्थाएं निर्धारित की गई हैं उन्हें भलीभाँति समझ लें तथा पूर्ण सहमत होने पर ही अपने बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश कराएं।
- प्रवेश के समय एवं प्रत्येक अभिभावक शिक्षक सभा (PTM) में अभिभावकों (माता-पिता दोनों) की उपस्थिति अनिवार्य है।
- गुरुकुल में प्रवेश लेते समय अभिभावकों द्वारा दी गई किसी भी सूचना अथवा तथ्यों में भविष्य में यदि कोई भी त्रुटि पाई जाती है या यह पाया जाता है कि कोई तथ्य छिपाया गया या गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया है तो इसके परिणामस्वरूप गुरुकुल प्रबंधन को यह अधिकार होगा कि विद्यार्थी को गुरुकुल से निष्कासित अथवा दण्डित कर सकें।
- स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र हेतु 15 दिन पहले लिखित आवेदन दिया जाना आवश्यक है।
- अभिभावकों का शिक्षण कक्ष अथवा छात्रावास कक्ष में प्राचार्य महोदय की अनुमति के बिना प्रवेश करना निषिद्ध है।
- बच्चों से मिलने अथवा संस्था के किसी कार्यक्रम में भाग लेने आए अभिभावकों को अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
- अभिभावक अपने बच्चों से सप्ताह में एक बार रविवार के दिन दूरभाष पर बात कर सकते हैं।
- समय-समय पर महत्वपूर्ण सूचनाएं अभिभावकों को SMS, E-mail या Whatsapp द्वारा भेजी जाएंगी। अतः अभिभावकों द्वारा पता (Address) अथवा मोबाइल फोन नंबर में किसी भी प्रकार का बदलाव किए जाने पर गुरुकुल प्रबंधन को लिखित रूप से अवगत करा दें।

### • विद्यार्थियों से मिलने व अवकाश सम्बन्धी व्यवस्था

- i) बालक के जन्मदिवस पर आकर यज्ञ में सम्मिलित हो सकते हैं एवं उस दिन 2 घण्टा बालक/बालिकाओं से मिल सकते हैं। उक्त अवसर पर अभिभावक अपनी ओर से सम्पूर्ण गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए फल, मिष्ठान व भोजन आदि की व्यवस्था कर सकते हैं।
  - ii) माता-पिता अपने बच्चों से माह में एक बार महीने के अन्तिम रविवार के दिन प्रातः 11:00 बजे से सायं 05:00 बजे के बीच अधिकतम 2 घण्टे तक विद्यार्थी से मिल सकते हैं।
  - iv) अवकाश समाप्ति पर गुरुकुल में समय से उपस्थित न होने पर निर्धारित दण्ड शुल्क देना होगा।
  - v) माता-पिता अपने अतिरिक्त अधिकतम तीन व्यक्तियों को विद्यार्थी से मिलने या ले जाने हेतु फोटो व हस्ताक्षर के साथ अनुमोदित करके अधिकृत कर सकते हैं। इन अधिकृत व्यक्तियों के अतिरिक्त किसी अन्य को विद्यार्थी से मिलने अथवा ले जाने की अनुमति नहीं होगी। अपरिहार्य स्थितियों में माता-पिता द्वारा दिए गए आवेदन पर विचार किया जा सकता है।
- गुरुकुल के किसी भी कर्मचारी को कोई भी उपहार या नगद राशि न दें। ऐसा किए जाने पर अभिभावक व कर्मचारी दोनों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

- सामर्थ्यवान अभिभावक बच्चों को खेल-कूद का सामान जैसे साईकिल, बैडमिंटन, फुटबॉल आदि देकर अथवा अन्य प्रकार के दान के माध्यम से भी बच्चों के विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं।
- गुरुकुल प्रबंधन द्वारा समय-समय पर लागू किए जाने वाले नियम सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकगणों को मानने होंगे।

## **विद्यार्थियों हेतु निर्देश**

- सभी विद्यार्थी स्वयं को उत्साहित एवं ऊर्जान्वित रखते हुए समस्त दिनचर्या का पालन पूर्ण मनोयोग से करें।
- सभी छात्रों का गुरुकुल के आश्रम (छात्रावास) में रहना अनिवार्य है। वार्डन (Warden) या आचार्य की पूर्व अनुमति और 'गेट-पास' के बिना परिसर से बाहर जाना पूर्णतः वर्जित है।
- विद्यार्थी गुरुजनों के प्रति पूर्ण श्रद्धा व निष्ठा रखते हुए गुरु-आज्ञा का पूर्णतः पालन करें।
- गुरुकुलीय अनुशासन एवं मर्यादाओं का ध्यान रखते हुए शालीन वेश-भूषा धारण करें, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा परस्पर सम्मान व सहयोग की भावना रखें।
- योग, यज्ञ, कक्षाओं एवं खेल-कूद के समय गुरुकुल द्वारा प्रदत्त निर्धारित गणवेश ही धारण करें।
- वैदिक संस्कृति के मुख्य प्रतीक चिह्नों यथा- शिखा, सूत्र (यज्ञोपवीत), तिलक आदि का सम्मान करें तथा इनको धारण करने में गौरव का अनुभव करें।
- अनावश्यक विषयासक्ति से दूर रहकर अध्ययन पर ध्यान केंद्रित रखें।
- ईर्ष्या-द्वेष, चोरी, झूठ, प्रमाद-आलस्य, अश्लील वार्ता तथा अशालीन आचरण आदि अकरणीय कार्य न करें।
- मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, आभूषण, निषिद्ध खाद्य पदार्थ तथा अनधिकृत वस्तुएँ गुरुकुल परिसर में रखना पूर्णतः वर्जित है।
- गुरुकुल परिसर में प्रवेश के समय निरीक्षक अधिकारी द्वारा विद्यार्थियों के सामान की जाँच अवश्य ही की जाएगी।
- बिजली के उपकरणों जैसे कि केटल, आयरन आदि का उपयोग निवास के लिए आवंटित किसी भी कक्ष में वर्जित है। विद्यार्थी के कक्ष में खाना पकाना वर्जित है। उपरोक्त उपकरण पाए जाने पर जब्त कर लिए जाएंगे और आर्थिक दण्ड भी देय होगा।
- दीवारों पर कुछ लिखना, विज्ञापन, पोस्टर, चित्र व कटिंग आदि चिपकाना और ट्यूब लाइट, परदे की रोड आदि पर कोई सामान टांगना पूर्णतया वर्जित है।
- अपने परिसर को स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग दें।
- सार्वजनिक संपत्ति, पेड़-पौधों एवं परिसर की किसी भी वस्तु को हानि न पहुँचाएं। गुरुकुल की संपत्ति को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने पर उसकी क्षतिपूर्ति विद्यार्थी की इंप्रेस्ट राशि से की जाएगी।
- अवकाश उपरांत समय पर गुरुकुल में उपस्थित होना आवश्यक है, अन्यथा विलंब की स्थिति में निर्धारित दंड लागू होगा।
- किसी भी समस्या, असुविधा या स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति की सूचना तुरंत सम्बन्धित आचार्य या प्रभारियों को अवश्य दें।
- रैगिंग विरोधी नीति (Anti-Ragging Policy): NCISM और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के दिशा-निर्देशों के अनुसार, संस्थान में रैगिंग पूर्णतः प्रतिबंधित है। रैगिंग जैसी अनुशासनहीनता में संलिप्त पाए जाने पर छात्र का प्रवेश तत्काल प्रभाव से निरस्त कर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

## गुरुकुल की मुख्य विशेषताएं

- नवीन शिक्षा व्यवस्था के अन्वेषक के रूप में पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम् में सनातन श्रुति परंपरा के साथ-साथ अत्याधुनिक विधाओं व उपकरणों से सुसज्जित परिसर बनाया गया है। जहाँ छात्र प्राचीन भारतीय दर्शन के साथ-साथ आयुर्वेदीय ग्रन्थों का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक बोध प्राप्त करते हैं।
- गुरुकुल में जाति वर्ग या क्षेत्र के नाम पर बालक-बालिकाओं के साथ भेद-भाव मुक्त व्यवहार किया जाता है।
- गुरुकुल के स्वच्छ, सुंदर व दिव्य परिवेश में विद्यार्थियों को मोबाइल, इंटरनेट एवं टीवी स्क्रीन के अनावश्यक प्रयोग से दूर रखा जाता है।
- शिक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व सभी छात्र-छात्राओं का वैदिक विधि-विधान से 'उपनयन संस्कार' किया जाता है।
- प्राचीन ज्ञान परम्परा से अवगत कराने के लिए गुरुकुल में योग, यज्ञ, स्वाध्याय, वेदपाठ, ध्यान, उपासना, गायत्री जप व त्राटक आदि अनेकानेक वैदिक स्वाध्याय-विधियों का बोध कराने के साथ समय-समय पर प्रसिद्ध विद्वानों व गुरुजनों का प्रवचन व उद्बोधन कराया जाता है।
- बालकों में भाषाई दक्षता व सम्भाषण कौशल विकसित करने के लिए हिंदी व संस्कृत तथा अन्य वैदेशिक भाषाओं का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
- शारीरिक दृढ़ता, अनुशासन व आत्मनिर्भरता पैदा करने के लिए छात्रों हेतु गुरुकुल में विविध प्रकार के खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- छात्रों की प्रतिभा व कौशल को निखारने के लिए कलात्मक प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ ही वैदिक शास्त्र परम्परा को पुनर्जीवित करने हेतु शास्त्र स्मरण प्रतियोगिताओं का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। जिसमें भाग लेकर विद्यार्थी प्रतिवर्ष 20 हजार से 1 लाख रुपये तक के पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं।
- गुरुकुलम् में अध्यापकों की गुणवत्ता पर विशेष बल दिया जाता है। परिसर वात्सल्य एवं ममतापूर्ण हो इसके लिये आचार्यगणों द्वारा बच्चों का विशेष ध्यान रखा जाता है।



## माँ गंगा और हिमालय का दिव्य सान्निध्य

देवभूमि हरिद्वार के कोलाहल से दूर, यह प्रदूषण-मुक्त परिसर साक्षात एक 'तपोवन' है। पवित्र गंगा की लहरों का स्पर्श कर आने वाली शीतल वायु, हिमालय का प्राकृतिक सौंदर्य और यहाँ की आध्यात्मिक ऊर्जा छात्रों के भीतर एकाग्रता और आत्मिक शांति का सहज जागरण करती है।



## विश्वस्तरीय चिकित्सा-तीर्थ 'योगग्राम'

इस गुरुकुल का सबसे बड़ा सौभाग्य इसके निकट स्थित 'योगग्राम' का होना है। गुरुकुलीय अनुशासन में रहते हुये छात्र निरंतर एक ऐसे विश्वस्तरीय 'चिकित्सा-तीर्थ' से जुड़े रहते हैं, जहाँ असाध्य रोगों पर प्रतिदिन नवीन अनुसंधान और साक्ष्य-आधारित (Evidence-based) चिकित्सा हो रही है।



# पतंजलि संस्थान द्वारा छात्र-छात्राओं हेतु मूलशास्त्र कण्ठपाठ करने पर पारितोषिक

| क्र.सं. | शास्त्र          | राशि    | क्र.सं. | शास्त्र               | राशि   | क्र.सं.            | शास्त्र                 | राशि    |
|---------|------------------|---------|---------|-----------------------|--------|--------------------|-------------------------|---------|
| 1       | ऋग्वेद           | 110,000 | 20      | तैत्तिरीयोपनिषद्      | 2,000  | 39                 | नीतिशतकम्               | 1,500   |
| 2       | यजुर्वेद         | 40,000  | 21      | श्वेताश्वतरोपनिषद्    | 3,000  | 40                 | वैराग्यशतकम्            | 1,500   |
| 3       | सामवेद           | 30,000  | 22      | ईशादि नौ उपनिषद्      | 20,000 | 41                 | नारदनीति                | 3,000   |
| 4       | अथर्ववेद         | 70,000  | 23      | छान्दोग्योपनिषद्      | 10,000 | 42                 | 100 शब्दरूप             | 2,000   |
| 5       | श्रीमद्भगवद्गीता | 20,000  | 24      | बृहदारण्यकोपनिषद्     | 10,000 | 43                 | 100 धातुरूप             | 3,000   |
| 6       | अष्टावक्र गीता   | 10,000  | 25      | अमरकोश                | 30,000 | 44                 | चरकसंहिता               | 275,000 |
| 7       | अष्टाध्यायी      | 20,000  | 26      | योगविज्ञानम्          | 30,000 | 45                 | अष्टाङ्गहृदय            | 70,000  |
| 8       | धातुपाठ          | 5,000   | 27      | चाणक्य नीति           | 10,000 | 46                 | उपचार पद्धति            | 60,000  |
| 9       | उणादिकोश         | 3,000   | 28      | विदुर नीति            | 10,000 | 47                 | हठप्रदीपिका             | 10,000  |
| 10      | लिङ्गानुशासन     | 1,000   | 29      | योगदर्शन              | 1,000  | 48                 | घेरण्ड संहिता           | 10,000  |
| 11      | पारिभाषिक        | 1,000   | 30      | सांख्यदर्शन           | 3,000  | 49                 | योगदर्शनभाष्य (शलाका)   | 30,000  |
| 12      | निघण्टु          | 1,000   | 31      | न्यायदर्शन            | 5,000  | 50                 | न्यायदर्शनभाष्य (शलाका) | 40,000  |
| 13      | ईशोपनिषद्        | 500     | 32      | वैशेषिकदर्शन          | 2,000  | 51                 | अष्टाङ्गहृदय (शलाका)    | 65,000  |
| 14      | केनोपनिषद्       | 1,000   | 33      | वेदान्तदर्शन          | 4,000  | 52                 | प्रथमावृत्ति (शलाका)    | 30,000  |
| 15      | कठोपनिषद्        | 3,000   | 34      | मीमांसा दर्शन         | 10,000 | 53                 | काशिका (शलाका)          | 40,000  |
| 16      | प्रश्नोपनिषद्    | 2,000   | 35      | योगदर्शनभाष्य         | 20,000 | 54                 | धातुवृत्ति (शलाका)      | 40,000  |
| 17      | मुण्डकोपनिषद्    | 3,000   | 36      | न्यायदर्शनभाष्य       | 25,000 | 55                 | महाभाष्य (नवाह्निकम्)   | 40,000  |
| 18      | माण्डूक्योपनिषद् | 500     | 37      | महाभाष्य (नवाह्निकम्) | 25,000 | कुल राशि 1,264,500 |                         |         |
| 19      | ऐतरेयोपनिषद्     | 1,000   | 38      | सांख्यकारिका          | 1,500  |                    |                         |         |

## महत्वपूर्ण तिथियाँ एवं संपर्क जानकारी

NEET-PA प्रवेश परीक्षा एवं प्रवेश अनुसूची (Annual Admission Schedule) केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (CSU) के दिशा-निर्देशों के अनुसार 7.5 वर्षीय समेकित आयुर्वेद पाठ्यक्रम में प्रवेश की संभावित वार्षिक रूपरेखा इस प्रकार है:

- प्रवेश अधिसूचना एवं ऑनलाइन पंजीकरण का आरंभ: जुलाई (July)
- आवेदन की अंतिम तिथि: अगस्त (August)
- **NEET-PA प्रवेश परीक्षा (Entrance Exam):** अगस्त/सितंबर (August/September)
- **परिणाम घोषणा एवं ऑनलाइन काउंसलिंग:** सितंबर (September)
- **गुरुकुल में प्रवेश एवं कक्षाओं का आरंभ:** अक्टूबर (October)

(नोट: प्रवेश की सटीक तिथियों की जानकारी के लिए कृपया प्रतिवर्ष CSU और संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट का अवलोकन करें।)

### संपर्क सूत्र

आपके उज्ज्वल भविष्य और आयुर्वेद की इस दिव्य यात्रा में आपका स्वागत है। किसी भी जानकारी या सहायता के लिए हमसे संपर्क करें :

- Central Sanskrit University (CSU) Admission Portal
- Online Application (Samarth Portal): Samarth Admission Portal (<https://sanskritadm.samarth.edu.in/index.php/>)
- CSU Official Website: [www.sanskrit.nic.in](http://www.sanskrit.nic.in)



**+91 7217035956, +91 9058674640**



**[pagh@divyayoga.com](mailto:pagh@divyayoga.com)**



**पतंजलि आयुर्वेद गुरुकुलम्, हरिद्वारम् योगग्राम के निकट,  
औरंगाबाद, हरिद्वार – 249402, उत्तराखण्ड, भारत**

### सूचना -

**NCISM एवं CSU द्वारा अन्य नियमों के निर्धारण के उपरांत विवरणिका में निर्दिष्ट नियमों में परिवर्तन हो सकता है।**



## India's First Ayurvedic Gurukulam

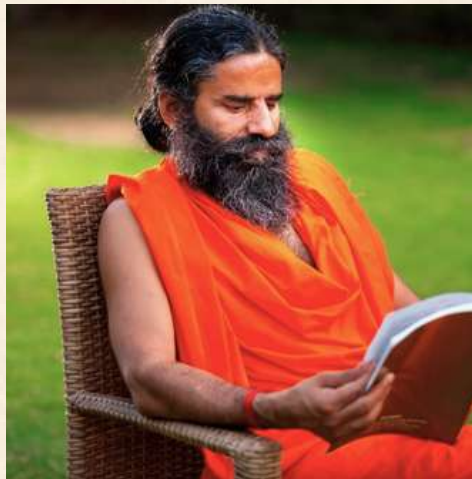
Established under the sacred vision and blessings of Yogarishi Swami  
Ramdev Ji and Revered Acharya Balkrishna Ji Maharaj

# Patanjali Ayurved Gurukulam



**PROSPECTUS**  
**2026-2027**

## Message from Param Pujya Swami Ramdev Maharaj Ji



The soul of India lies in its rich knowledge tradition. This is a land where life has never been understood merely in terms of material achievements, but as a harmonious integration of the body, mind, nature, and consciousness. India's eternal culture and its great lineage of sages have offered humanity a scientific and holistic vision for health, well-being, and a balanced way of life.

Today, as the entire world is grappling with physical ailments, mental stress, and complex health challenges associated with modern lifestyles, the holistic approach to health offered by

Yoga and Ayurveda has assumed even greater significance. It has always been our firm resolve that Ayurveda should not remain confined merely to the realm of 'alternative medicine', but should be established across the world as an eternal philosophy of life and a science of health.

The establishment of Patanjali Ayurveda Gurukulam is not merely intended to confer degrees or produce conventional physicians. This Gurukulam is, in essence, a 'Centre for Nation and Human Development'. Our aim is to nurture dedicated, radiant, and accomplished Ayurveda practitioners who, as true torchbearers of the great tradition of Acharyas such as Dhanvantari, Charaka, and Sushruta, devote themselves selflessly to the service of society.

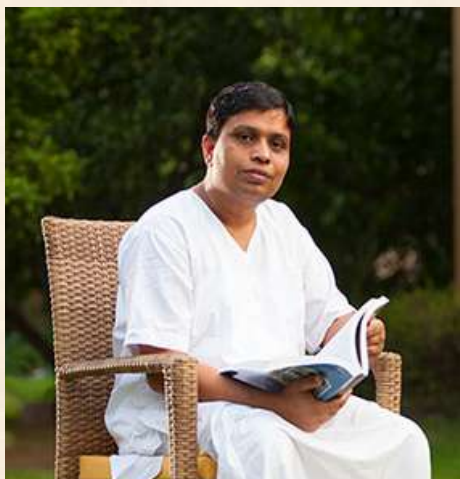
In this sacred institution, students will not be confined merely to intellectual and book-based learning. Education here will be integrated with discipline, a sattvic way of life, Yoga, meditation, compassion, and the values of service to the nation, so that along with knowledge, character may also be developed, and along with skills, a deep sense of responsibility may be cultivated.

May the students who graduate from here become seekers of knowledge for the modern age—individuals who, through their excellence in learning, purity of conduct, and spirit of service, make a meaningful contribution to society and to the global health community. Wherever they go, may they become representatives of India's knowledge tradition and carry forward its values and scientific outlook.

With the noble objective of serving the nation, I urge you all to contribute your share towards building a healthy, empowered, and prosperous India through the holistic approach of Yoga and Ayurveda. My heartfelt blessings and best wishes for a bright future to all the students who join this sacred resolve of "Healthy India, India as Vishwaguru.

- Swami Ramdev

## Message from Param Shraddheya Acharya Balkrishna Ji



India's knowledge tradition is not merely a legacy of our past; it is a guiding force for the present and a foundation for shaping the future. At a time when the world is increasingly seeking holistic, natural, and sustainable approaches to health, it is important for India to advance its Ayurvedic heritage beyond healthcare alone and develop it as a comprehensive field encompassing life sciences, research, innovation, skill development, and self-reliance.

One of India's greatest strengths is its young population. This strength requires not only degrees, but also the right direction, practical skills, and meaningful opportunities. Therefore,

making Ayurveda education employment-oriented and entrepreneurship-driven is an important priority. Our endeavor is to enable students to understand the opportunities available across diverse fields such as medicinal plant cultivation, pharmaceutical manufacturing, quality testing, research, Ayurveda-based industries, health and wellness, and entrepreneurship, while developing the practical skills required to pursue them. We aspire to empower students not only to create opportunities for themselves but also, in the future, to generate opportunities for others. Every student graduating from the Gurukulam should carry the conviction that Ayurveda is not merely a subject of study, but also a responsibility.

The purpose of education, however, extends beyond producing skilled physicians or technical professionals. Knowledge must be accompanied by values, skills by compassion, and science by responsibility towards nature and society. The Gurukula tradition inspires this holistic development of personality. Our aim is to nurture young individuals who develop a balanced respect for their heritage alongside a spirit of inquiry towards modern science, and who possess both the competence and sensitivity to apply their knowledge for the welfare of society.

Patanjali Ayurved Gurukulam is a humble endeavor towards this integrated vision where education connects with life, classical knowledge with practice, agriculture with industry, and research with innovation. We seek to create meaningful dialogue between traditional knowledge and modern scientific thought, while providing students with opportunities not only to learn, but also to experiment, innovate, and apply their skills in real-world settings.

I firmly believe that when our young generation receives the right blend of knowledge, values, and practical opportunities, it can give meaningful direction to its own future while playing an important role in taking India's rich Ayurvedic heritage to new heights in the contemporary world.

My heartfelt best wishes for a bright, purposeful, and fulfilling life to all students and parents who are committed to this endeavor.

- Acharya Balkrishna

## Principal's Message



A warm welcome to you all to the sacred campus of Patanjali Ayurveda Gurukulam. Operating in accordance with the academic and statutory standards of Central Sanskrit University (CSU) and the National Commission for Indian System of Medicine (NCISM), our institution represents a unique and successful initiative in the field of education.

In accordance with the vision of the National Education Policy (NEP 2020), we have brought about comprehensive changes in our teaching methodology. We have moved decisively beyond the traditional practice of rote learning and place the highest

emphasis on experiential, analytical, and practical learning. A great Vaidya is shaped not merely through books, but also through direct clinical examination and interaction with patients. Keeping this principle in mind, we ensure that, within the natural and disciplined environment of the Gurukulam, students put into practice the theoretical knowledge acquired in the classroom during their clinical training in our advanced Outpatient Department (OPD) and Inpatient Department (IPD).

With access to advanced modern laboratories, including Anatomy and Physiology Laboratories, a rich library equipped with ancient manuscripts, digital smart classrooms, and the guidance of highly experienced Acharyas, students are provided with opportunities to explore their subjects in depth and develop a comprehensive understanding of Ayurveda.

Alongside education, values and character formation remain our highest priority. Upholding the traditional Guru-Shishya Parampara, our aim is to foster the physical, mental, and spiritual development of students through daily Yoga, meditation, Yajna, and a sattvic daily routine.

Our ultimate objective is not merely to confer upon students the degree of a Vaidya, but to provide them with value-based education and shape them into exemplary citizens and compassionate healthcare professionals who, in the future, can contribute to the health and well-being of every section of society. Thus, this sacred institution of learning and values lays a strong and lasting foundation for the bright future of its students.

A handwritten signature in black ink, reading "Ketan Mahajan". The signature is stylized and written in a cursive script.

- Vaidya Ketan Mahajan

# About Patanjali Ayurveda Gurukulam, Haridwaram

Established under the sacred blessings of Param Puja Swami Ramdev Ji and the visionary guidance of Shraddheya Acharya Balkrishna Ji, Patanjali Ayurved Gurukulam Haridwaram is a distinctive center that brings together the rich heritage of Indian knowledge traditions, Ayurveda, and modern science. Inspired by the vision of “Swasth Bharat, Vishwaguru Bharat”, the Gurukulam is committed to the holistic development of students through knowledge, skills, values, and character.

Situated on the sacred banks of Maa Ganga, at the foothills of the Shivalik ranges of the Himalayas, the Gurukulam seeks to carry forward the illustrious Ayurvedic legacy of Maharshi Dhanvantari, Acharya Charaka, and Acharya Sushruta in the contemporary era. It seeks to foster a profound understanding of Ayurveda’s timeless principles while connecting them with contemporary scientific thought and emerging needs.

Alongside classical learning, the Gurukulam places strong emphasis on practical training and skill development. Students gain not only a strong foundation in Ayurvedic theory but also hands-on exposure to clinical practice, medicinal plants, pharmaceutical preparation, and diverse practical dimensions of Ayurveda. Indian culture, discipline, ethical values, and a spirit of service are integral to its educational ethos, nurturing competent, compassionate, and responsible Ayurvedic professionals committed to the health and well-being of society and the nation.

The broader vision of the institution is to reinforce the scientific and enduring foundations of Ayurveda, expand its national and global recognition, and advance India’s rich medical knowledge heritage in tune with contemporary needs. Through this integrated vision of education, research, and service, Patanjali Ayurved Gurukulam aspires to shape the future of Ayurveda and nurture a new generation of its custodians and innovators.



This is an actual photograph of the building of Patanjali Ayurveda Gurukulam.

## Affiliations & Approvals

Duly recognized by the Ministry of AYUSH, Government of India, and the National Commission for Indian System of Medicine (NCISM), New Delhi, under the NCISM Act, 2020, and affiliated to Central Sanskrit University, New Delhi, established by an Act of Parliament under the Central Sanskrit Universities Act, 2020.

## Vision

To create a global healthcare system through the harmonious integration of ancient Oriental knowledge of Ayurveda and modern scientific research, providing not only freedom from disease but also holistic health and well-being.

Our resolve is to contribute towards realizing the dream of **“Healthy India, India as the World Guru.”**

## Mission

- To nurture outstanding Ayurvedacharyas, Vaidyas, and researchers who are spiritually awakened, morally strong, and intellectually accomplished.
- To promote evidence-based healthcare alongside an in-depth study of the Sanskrit language and the original classical Ayurvedic texts (Samhitas).
- To serve humanity selflessly while fostering sensitivity towards nature, medicinal herbs, and the environment.
- To equip students with traditional knowledge as well as modern practical and professional skills, enabling them to become fully capable of securing employment and achieving self-reliance.



# Integrated Academic Framework of NEP 2020 and Indian Knowledge Systems (IKS)

The academic structure of Ayurveda Gurukulam integrates the timeless heritage of the Indian Knowledge Tradition with modern education, a scientific outlook, and practical skills. Its objective is to nurture competent, sensitive, and research-oriented Ayurveda graduates who are proficient in both classical knowledge and contemporary medical science.



## Multidisciplinary and Scientific Approach



Integration of Yoga, Naturopathy, modern Rachana Sharira (Anatomy), Kriya Sharira (Physiology), and research methodologies with Ayurveda, enabling students to develop a broad and scientific perspective.



## Study of the Original Classical Texts



In-depth study of the original Sanskrit texts and Ayurvedic principles of major classical works such as the Charaka Samhita, Sushruta Samhita, and Ashtanga Hridaya, along with practical exposure to traditional systems of healthcare.



## Experiential and Practical Learning



With emphasis on the principle of “Learning by Doing,” special focus is placed on clinical training, identification, cultivation, utilization, and processing of medicinal plants, as well as pharmaceutical preparation and laboratory-based activities.



## Holistic Personality and Value-Based Development



Special emphasis is placed on the physical, mental, intellectual, and ethical development of students through Yoga, meditation, discipline, and Indian values of life.



## Skill Development and Self-Reliance



Development of professional skills, innovation, entrepreneurship, and a spirit of self-reliance to prepare students for diverse fields of healthcare, research, education, and health and wellness.

## Academic Programs & Course Details

|                              |                                    |
|------------------------------|------------------------------------|
| <b>Course Name</b>           | Pre-Ayurveda Programme for BAMS    |
| <b>Total Course Duration</b> | Seven and a Half Years (7.5 Years) |
| <b>Intake Capacity</b>       | 60 Seats                           |
| <b>Medium of Instruction</b> | Sanskrit, Hindi, and English       |

### Course Structure 7.5 Years

In accordance with the Gurukulam-based academic framework of CSU, the programme is divided into three major stages:

#### **First Stage: Pre-Ayurveda – (2 Years)**

This stage commences after Class 10 (Matriculation). Before beginning core medical studies, students are provided with a strong academic foundation. The curriculum includes an in-depth study of the Sanskrit language, Indian philosophy such as Nyaya, Vaisheshika, Sankhya, etc., and Basic Sciences. This foundation enables students to understand the original Ayurvedic classical texts in their authentic context and meaning.

#### **Second Stage: Ayurvedacharya – (4.5 Years)**

This is a comprehensive, multidisciplinary, and multifaceted Core Medical Programme based on the standards prescribed by NCISM. Along with the direct and in-depth study of the original and authentic classical texts of Ayurveda, students will receive integrated knowledge of modern medical sciences, including Anatomy, Physiology, Pathology, Pharmacology, Surgery, and other relevant disciplines.

#### **Third Stage: Compulsory Internship – (1 Year)**

In the final stage, students are required to undergo one year of intensive and compulsory clinical internship in the Outpatient Departments (OPD) and Inpatient Departments (IPD) of hospitals associated with Patanjali Yogpeeth. Under the guidance of senior Acharyas and experienced healthcare professionals, students gain direct clinical exposure and practical experience in the management of complex health conditions.

# Special Features of the Curriculum

The objective of the curriculum is to provide students with a comprehensive medical education that integrates theoretical knowledge with practical training, research orientation, and life-oriented learning. It aims to equip students with the requisite knowledge, skills, and competencies across diverse fields of Ayurveda, enabling them to become self-reliant and pursue sustainable livelihood opportunities in eight major fields upon completion of their education.



### **1. Medicinal Plant Cultivation & Agriculture**

- Ayurvedic Agriculture & Sustainable Farming Practices
- Collection, Cultivation, Processing & Value Addition of Medicinal Plants

### **2. Ayurvedic Pharmacology & Materia Medica**

- Pharmacological Properties & Therapeutic Applications
- Drug Selection, Dosage & Rational Use

### **3. Medicinal Preparation & Bhaishajya Kalpana**

- Rasashastra, Dravya Shodhana & Ayurvedic Medicine Preparation
- Raw Material Processing & Quality Control

### **4. Evidence-Based Research & Development**

- Research Methodology & Data Analysis
- Innovation & Development of New Ayurvedic Formulations
- Evidence-Based Evaluation of Ayurvedic Practices
- Clinical Research Documentation & Publication

### **5. Yoga & Naturopathy**

- Yoga Practices & Therapeutic Applications
- Principles & Practices of Naturopathy

### **6. Clinical Training, Swasthavritta & Preventive Healthcare**

- Roga-Rogi Pariksha & Case-Based Clinical Training
- Swasthavritta, Pathya-Apathya & Health Promotion
- Nidana Parivarjana & Disease Prevention

### **7. Integrative, Holistic & Traditional Healing Sciences**

- Yajña Chikitsa
- Dhuma Chikitsa
- Mantra Chikitsa
- Dhvani Chikitsa
- Sūrya-kiraṇa Chikitsa
- Prāṇa-based Practices
- Marma Therapy
- Aroma-based Practices
- Lifestyle-Based Health Management
- Other Traditional & Holistic Healing Practices

### **8. Communication & Knowledge Presentation Skills**

- Presenting Ayurvedic principles in a simple and effective manner.
- Promoting Ayurveda through lectures, dialogue and various communication platforms.
- Communicating the knowledge and utility of Ayurveda to the general public.

# Infrastructure & Clinical Facilities

For the holistic development of students and to nurture them into accomplished Vaidyas, the Gurukulam provides world-class facilities in accordance with the standards of Central Sanskrit University (CSU) and the National Commission for Indian System of Medicine (NCISM).



## Smart Classrooms and Teaching

Classrooms equipped with modern Audio-Visual (AV) facilities, providing an effective blend of digital technology and traditional teaching methods.



## Rich Library

A vast collection of thousands of books on Ayurveda, modern medical sciences, and Indian philosophy, along with a valuable collection of rare ancient manuscripts, providing students with extensive academic and research resources.



## Advanced Laboratories

State-of-the-art laboratories for imparting practical knowledge in Physics, Biology, Chemistry, Rachana Sharira (Anatomy), Kriya Sharira (Physiology), Pathology, and other relevant disciplines.



## Extensive Medicinal Botanical Garden

A richly developed botanical garden spread across a large area, housing thousands of rare and useful medicinal plant species. It provides students with opportunities for direct identification, study, cultivation, and practical understanding of medicinal plants.



## Rasa Shala and Pharmaceutical Training

A modern Rasa Shala and pharmacy facility where students receive hands-on training in the preparation of medicines and various Ayurvedic pharmaceutical formulations.





**These images are provided for illustrative purposes only.**

## Admission Process & Eligibility

Admission to the 7.5-year Pre-Ayurveda Programme for BAMS at Patanjali Ayurveda Gurukulam (2 years of Pre-Ayurveda + 5.5 years of B.A.M.S.) is conducted in accordance with the latest applicable regulations and guidelines of Central Sanskrit University (CSU) and NCISM. It follows a distinctive Gurukulam-based system in which admission to the programme begins **after Class 10**.

### Eligibility

The applicant must have passed the Class 10 (Matriculation) examination from any recognized educational board, such as a State Board, CBSE, or Sanskrit Board, under the 10+2 or 5+3+3+4 educational structure.

### Age Limit

The applicant must be at least 15 years of age and not more than 25 years of age. No relaxation in the maximum age limit of 25 years shall be applicable to candidates belonging to reserved categories.

### Entrance Examination NEET-PA

Admission is based solely on the national-level entrance examination conducted by Central Sanskrit University (CSU), namely “NEET-PA” (National Eligibility-cum-Entrance Test – Pre-Ayurveda). In this multiple-choice, OMR-based examination, candidates belonging to the General Category are required to secure a minimum of 50% marks, while candidates belonging to reserved categories (SC/ST/OBC/PwD) are required to secure a minimum of 40% marks to qualify.

## Selection & Counselling

An All-India Common Merit List is prepared on the basis of the marks obtained in NEET-PA. Admission is granted exclusively through online counselling. Direct admission of any kind is strictly prohibited.



Online  
Registration



Registration  
Fee



Uploading of  
Documents



## Application Process

Interested candidates are required to register online through the Government of India's Samarth Portal. (<https://sanskritadm.samarth.edu.in/index.php/>)



## Registration Fee

The prescribed registration fee is payable through online mode:

|                  |        |
|------------------|--------|
| General Category | ₹1,000 |
| EWS/OBC          | ₹600   |
| SC/ST/PwD        | ₹500   |



## Uploading of Documents:

Applicants are required to upload the necessary documents on the portal, such as the Class 10 marksheet, category certificate, and passport-size photograph.

## Patanjali Ayurved Gurukalam Account Details

- Account Name Patanjali Ayurved Gurukalam Haridwaram
- A/C No. 4871000100178258
- IFSC Code PUNB0487100
- Name of the Bank Punjab National Bank
- Bank Branch Patanjali Yogpeeth Santersha Branch, Haridwar



# Rules & Code of Conduct

## **Instructions for Parents and Guardians**

- Parents must carefully read and agree to all rules, regulations, and arrangements of the Gurukulam before admitting their child.
- The presence of both parents is mandatory at the time of admission and at every Parent-Teacher Meeting (PTM).
- Any incorrect, concealed, or misleading information provided at the time of admission may result in disciplinary action, including cancellation of admission or expulsion from the Gurukulam.
- A written application for a Transfer Certificate (TC) must be submitted at least 15 days in advance.
- Parents may not enter classrooms or hostel premises without prior permission from the Principal.
- Parents visiting their child or attending institutional programs must arrange their own accommodation.
- Parents may speak to their child by telephone once a week, on Sundays.
- Important communications will be sent through SMS, e-mail, or WhatsApp. Parents must promptly inform the Gurukulam in writing of any change in their address or contact number.

- **Meeting Students and Leave Arrangements**

1. Parents may visit their child on the child's birthday for a maximum of 2 hours and may participate in the Yajna.
  2. Parents may meet their child once every two months, on the last Sunday of the month, between 11:00 a.m. and 5:00 p.m., for a maximum of 2 hours.
  3. A 20-day annual vacation will be granted during Diwali.
  4. Late return after approved leave will attract the prescribed penalty.
  5. Parents may authorize up to three additional persons, with photographs and signatures, to visit or take the student. No other person will be permitted without prior approval.
- Parents must not offer gifts or cash to any Gurukulam employee. Violation may result in disciplinary action against both the parent and employee.
  - Parents may support students' development through donations, including sports equipment such as bicycles, badminton equipment, and footballs, as permitted by the Gurukulam.
  - All rules and regulations introduced or amended by the Gurukulam management from time to time shall be binding on all students and parents.

## **Instructions for Students**

- Students must remain motivated and energetic and follow the prescribed daily routine with sincerity and dedication.

- All students are required to reside in the Gurukulam hostel (Ashram). Leaving the campus without prior permission from the Warden/Acharya and a valid Gate Pass is strictly prohibited.
- Students must maintain due respect and reverence for their teachers and sincerely follow their instructions.
- Students must observe Gurukulam discipline and decorum, dress modestly, and maintain a spirit of mutual respect, cooperation, and cordiality.
- The prescribed Gurukulam uniform must be worn during Yoga, Yajna, classes, and sports activities.
- Students shall respect the traditional symbols of Vedic culture, such as Shikha, Yajnopavita (sacred thread), and Tilak, and wear them with dignity.
- Students should avoid unnecessary distractions and remain focused on their studies.
- Jealousy, hatred, theft, lying, negligence, laziness, obscene conversation, and inappropriate behavior are strictly prohibited.
- Mobile phones, electronic devices, jewellery, prohibited food items, and unauthorized articles are strictly prohibited on the Gurukulam campus.
- Students' belongings will be subject to inspection by the authorized inspection officer at the time of entry into the Gurukulam.
- Electrical appliances such as kettles and irons are prohibited in residential rooms. Cooking in rooms is strictly prohibited. Such items, if found, will be confiscated and may attract a financial penalty.
- Writing on walls, displaying advertisements, posters, pictures or cuttings, or hanging items from tube lights, curtain rods, or other fixtures is strictly prohibited.
- Students must actively contribute to maintaining cleanliness and hygiene within the campus.
- Students must not damage public property, plants, or any Gurukulam property. Any damage caused will be recovered from the student's imprest/security deposit, as applicable.
- Students must return to the Gurukulam on time after leave. Late arrival will attract the prescribed penalty.
- Any problem, inconvenience, or health-related concern must be immediately reported to the concerned Acharya or designated authority.
- Anti-Ragging Policy: Ragging is strictly prohibited in accordance with applicable NCISM and UGC guidelines. Any student found involved in ragging or related misconduct may face cancellation of admission and appropriate legal/disciplinary action.

## Key Features of the Gurukulam

- As a pioneer in an integrated educational approach, Patanjali Ayurved Gurukulam combines the Sanatana oral knowledge tradition with a modern campus equipped with contemporary facilities and learning tools. Students gain both theoretical and practical understanding of Ayurvedic texts and ancient Indian philosophy.
- The Gurukulam provides an inclusive and non-discriminatory environment, with no distinction based on caste, social background, or region.
- In its clean, serene, and spiritually enriching environment, students are encouraged to remain free from the unnecessary use of mobile phones, the internet, and television screens.
- Before commencing their education, all students undergo the Upanayana Samskara in accordance with Vedic traditions.
- To familiarize students with India's ancient knowledge traditions, the Gurukulam provides training in Yoga, Yajna, self-study, Vedic recitation, meditation, spiritual practices, Gayatri Japa, and Trataka, along with discourses and guidance from eminent scholars and teachers.
- Students receive training in Hindi, Sanskrit, and selected foreign languages to develop linguistic proficiency and communication skills.
- A range of sports and physical activities is provided to foster physical fitness, discipline, teamwork, and self-reliance.
- To nurture students' talents and skills, the Gurukulam organizes creative competitions as well as annual Shashtra Smaran competitions, aimed at preserving and revitalizing the traditional knowledge of Vedic scriptures. Students may earn prizes ranging from ₹20,000 to ₹1 lakh through participation in these competitions.
- The Gurukulam places strong emphasis on teacher quality and student care. Acharyas provide individual attention and guidance, fostering a supportive, caring, and nurturing campus environment.



## **Divine Presence of Mother Ganga and the Himalayas**

Away from the hustle and bustle of Haridwar in Devbhoomi, the pollution-free campus serves as a veritable Tapovana sacred retreat for learning, contemplation, and spiritual growth. The cool breeze carrying the freshness of the sacred Ganga, the natural beauty of the Himalayan landscape, and the spiritual ambience of the surroundings naturally foster concentration, inner peace, and a sense of spiritual well-being among students.



## **World-Class Healthcare Centre ‘Yog Gram’**

One of the greatest advantages of this Gurukulam is its proximity to Yog Gram. While following the disciplined Gurukulam lifestyle, students remain closely connected with a world-class healthcare centre where ongoing research and evidence-based approaches to healthcare are undertaken in the management of complex health conditions.



# Important Dates & Contact Information

## NEET-PA Entrance Examination & Annual Admission Schedule

As per the guidelines of Central Sanskrit University (CSU), the tentative annual admission schedule for admission to the 7.5-year Integrated Ayurveda Programme is as follows:

- Admission Notification & Commencement of Online Registration: July
- Last Date for Submission of Applications: August
- NEET-PA Entrance Examination: August/September
- Declaration of Results & Online Counselling: September
- Admission to the Gurukulam & Commencement of Classes: October

Note: For the exact dates and the latest admission schedule, candidates and parents are advised to visit the official website of Central Sanskrit University (CSU) and the institution every year.

## Contact Us

We warmly welcome you to this journey towards a bright future and the enriching world of Ayurveda. For any information, assistance, or admission-related queries, please feel free to contact us:

- Central Sanskrit University (CSU) Admission Portal
- Online Application (Samarth Portal): Samarth Admission Portal (<https://sanskritadm.samarth.edu.in/index.php/>)
- CSU Official Website: [www.sanskrit.nic.in](http://www.sanskrit.nic.in)



**+91 7217035956, +91 9058674640**



**[pagh@divyayoga.com](mailto:pagh@divyayoga.com)**



**Patanjali Ayurved Gurukulam, Haridwaram  
Near Yog Gram, Aurangabad,  
Haridwar – 249402, Uttarakhand, India**

## **Note :**

The rules specified in the prospectus are subject to change following the formulation of further rules by NCISM and CSU.



आयुष्कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम् ।  
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः ॥ (अ.ह.सू.-१.२)

धर्म, अर्थ और सुख की प्राप्ति के साधन रूपी दीर्घायु (लंबी और स्वस्थ आयु)  
की कामना करने वाले मनुष्य को आयुर्वेद के उपदेशों का परम आदर (पालन) करना चाहिए ।

One who desires longevity, which is the ultimate instrument for achieving Dharma  
(righteousness), Artha (wealth), and Sukha (happiness), must show utmost  
reverence to the teachings of Ayurveda.



**Patanjali Ayurved Gurukulam, Haridwaram**

**Tel: +91 7217035956, +91 9058674640**

**Email: pagh@divyayoga.com**

**Address: Patanjali Ayurveda Gurukulam, Haridwar  
Near Yoggram, Aurangabad, Haridwar – 249402, Uttarakhand**